CBSE Test Paper 04

Ch-12 ऋतुराज

1. **निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   कितना प्रामाणिक था उसका दुःख
   लड़की को दान में देते वक्त
   जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
   लड़की अभी सयानी नहीं थी
   अभी इतनी भोली सरल थी।
   कि उसे सुख का आभास तो होता था
   लेकिन दुःख बाँचना नहीं आता था
   पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की
   कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की

   i. काव्यांश की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।
   ii. दुःख-बाँचने' से कवि का क्या आशय है ?
   iii. इन पंक्तियों को पढ़कर लड़की की जो छवि आपके सामने उभरकर आ रही है, उसे शब्दबद्ध कीजिए।

2. लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' का क्या भाव है?

3. 'कन्यादान' कविता में किसके दुःख की बात की गई है और क्यों?

4. माँ का अपनी पुत्री का कन्यादान करने का दुःख क्यों प्रामाणिक स्वाभाविक था?

5. कन्यादान कविता में किसे दुःख बाँचना नहीं आता था और क्यों?

6. 'कन्यादान' कविता की माँ परम्परागत माँ से कैसे भिन्न है?

CBSE Test Paper 04

Ch-12 ऋतुराज

Answer

1. i. काव्यांश में खड़ी बोली के व्यावहारिक रूप का प्रयोग किया गया है। भाषा सरल, स्पष्ट तथा सामान्य बोलचाल के शब्दों से युक्त खड़ी बोली है। काव्यांश में अतुकांत शैली है।
   ii. 'दु:ख-बाँचने' से कवि का आशय है कि कन्या को वैवाहिक जीवन में आने वाले दु:खों का कोई ज्ञान नहीं था अर्थात् वह विवाहोपरात आने वाली कठिनाइयों से परिचित नहीं थी।
   iii. इन पंक्तियों को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि लड़की अत्यंत भोली-भाली v सरल थी जिसे दुनियादारी की समझ नहीं थी । उसका सामना दुख से नहीं हुआ था वह जीवन में आने वाले दुखों को नहीं पहचानती थी। ससुराल में मिलने वाले दु:खों के प्रति अनजान थी। उसे तो वैवाहिक सुखों के बारे में बस थोड़ा-सा ज्ञान है।

2. लड़की के समान कोमल भावनाओं और गुणों को ग्रहण करना लेकिन कमजोरी मत अपनाना। लज्जा और कोमलता को कोई अनुचित न समझे। लड़कियां वास्तव में सरल स्वभाव की भोली-भाली और समाज के बारे में इतना उनको ज्ञान नहीं होता है तो माँ उनसे यही कहना चाहती है कि मेरी प्रिय बेटी आप लड़की हो पर लड़की की जैसी दिखाई मत देना क्योंकि समाज में जो भोले भाले इंसान होते हैं उनको लोग हर समय प्रताड़ित करते रहते हैं आप को समझदार होना है और समझदारी से काम लेना है आप लड़की हो तो लड़के जैसे कोमल सुभाव के ही नहीं रहना आपको अपने स्वभाव में कठोरता लेकर आनी है तभी आप ससुराल में अच्छे से रह पाएंगे।

3. - कन्यादान कविता में माँ के दु:ख की बात की गई है।
   - क्योंकि वह अपनी पुत्री का कन्यादान कर रही है। तो उन्हें बहुत दुख हो रहा था क्योंकि उनको मालूम है कि उनकी बेटी अभी इतनी सयानी नहीं हुई है जो ससुराल में जाकर वह अपना वैवाहिक जीवन सुख से व्यतीत कर सकें।

4. 'माँ को अपनी पुत्री का कन्यादान करने का दु:ख प्रमाणिक, स्वाभाविक था क्योंकि उसकी पुत्री (लड़की) अत्यंत भोली-भाली, सरल तथा ससुराल में मिलने वाले दु:खों के प्रति अनजान thi। उस समय माँ को यह लगता है कि लड़की उसकी अन्तिम पूंजी है क्योंकि अपने सभी संस्कारों को माँ अपनी बेटी में भरती है । उसे तो वैवाहिक सुखों के बारे में बस थोड़ा-सा ज्ञान है।

5. कन्यादान कविता में 'बेटी' को दु:ख बाचना नहीं आता हैं क्योंकि जब उसका विवाह हो रहा था तब वह अधिक समझदार नहीं थी। वह अत्यंत भोली एवम् सरल स्वभाव की है उसे दु:ख का अनुभव नहीं है। उसको ससुराल के बारे में अभी कुछ भी जानकारी नहीं है। अभी वह ससुराल को भी एक खेल ही समझती है कि वहाँ पर भी सब मेरे माता-पिता जैसे ही होंगे या वहां पर भी जैसे हम अपने घर पर खेलते हैं, खाते- पीते हैं ऐसे ही ससुराल में भी रहेंगे पर उसे यह बिल्कुल भी पता नहीं है कि ससुराल की का जीवन अपने घर के जीवन से बहुत अलग है।

6. परंपरागत माँ अपनी बेटी को सब कुछ सहकर दूसरों की सेवा करने की सीख देती है। लेकिन 'कन्यादान' कविता में माँ सीख देती है कि लड़की के गुणों को बनाए रखना, ससूराल में कभी कमजोर मत बनना। वह दहेज के लिए जलाए जाने के खतरे के बारे में माँ ने लड़की को आगाह किया है। और कहा कि गहने, वस्त्राभूषणों के बन्धन से दूर रहना है। वह शोषण का पात्र न बने जबकि शोषण का विरोध करें। और सामाजिक मर्यादा का पालन करें। ये सभी शिक्षा है, वह अपनी लड़की को देती है इसलिए 'कन्यादान' कविता की माँ आधुनिक माँ से बिल्कुल भिन्न है।